बच्चों में टीकाकरण का महत्व तथा रोग के लक्षण व बचने के उपाय
कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 12–15

बच्चों में टीकाकरण का महत्व तथा रोग के लक्षण व बचने के उपाय

डा0 शकुन्तला गुप्ता
सह निदेशक (गृह विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, नगीना (बिजनौर) उ0प्र0
सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम्, मेरठ, उ.प्र.
E.mail : shakuntalaguptakvk@gmail.com

टीकाकरण का उद्देश्य जानलेवा बीमारियॉ जैसे

गलघोटू, पोलियो, तपेदिक, कालीखांसी, टिटनेस और खसरे आदि रोगों से लड़ने की क्षमता शरीर में विकसित करना जिससे ये रोग न हो। टीके मृत बैक्टीरिया या वायरस होते है, जो वैक्सीन दवा में कन्वर्ट कर दी जाती है और रोग के प्रति पहले ही तैयारी कर ली जाती है जिससे आने वाले समय में वह रोग न हो जिसकी वैक्सीन ले रखे है, नियमित टीकाकरण जन्म के समय शुरू होता है एक श्रंखला है। बच्चों के शरीर में रोग/किसी विशिष्ट रोगों को रोकने के जो दवा खिलायी या पिलायी जाती है जिससे उस रोग के प्रति शरीर में प्रतिरोधक क्षमता तैयार हो जाती हैं। स्वास्थ्य रक्षा हेतु निरोधक टीके शिशुओं को मुख्यतया छः बीमारियां होती हैं, जिनका विवरण चार्ट निम्नवत है।

क0सं.	टीकाकरण का अवधि	टीकाकरण का नाम
1.	**जन्म का समय**	बीसीजी का टीका ओपीवी की 0 खुराक हेपेटाइटिस बी का 0 टीका
2.	**6 सप्ताह**	बीसीजी (अगर जन्म के समय न दिया गया हो) का टीका डीपीटी–पहला टीका ओपीवी–पहली खुराक हेपेटाइटिस बी–पहला टीका
3.	**10 सप्ताह**	डीपीटी–दूसरा खुराक ओपीवी –दूसरी खुराक हेपेटाइटिस बी–दूसरा टीका
4.	**14 सप्ताह**	डीपीटी–तीसरा खुराक ओपीवी– तीसरा खुराक हेपेटाइटिस बी– तीसरा टीका
5.	**9 महीने**	खसरा (मीजल्स) का टीका विटामिन ए पहला खुराक
6.	**16–24 महीने**	डीपीटी–पहला बूस्टर खसरा–दूसरा टीका ओपीवी–बूस्टर विटामिन ए दूसरा खुराक
7.	**2 से 5 वर्ष**	विटामिन ए–6 महीने के अंतर पर तीसरी से नवीं खुराक। (कुल 7 खुराक)
8.	**5 वर्ष**	डीपीटी–दूसरा बूस्टर

9.	**10 वर्ष**	टी0 टी0 का टीका
10	**16 वर्ष**	टी0 टी0 का टीका

रोग के लक्षण व बचने के उपाय

चेचक– यह रोग मुख्यतया कुपोषित बच्चों में अधिक होता है, क्योंकि कुपोषित बच्चों में रोगों से लड़ने की क्षमता अन्य स्वस्थ बच्चों की तुलना में कम होती है। यह किसी भी मौसम में हो सकता है। इसके विषाणु आसानी से शरीर में प्रवेश कर श्वांस नली के अन्दर प्रवेश कर जाते हैं।

लक्षण– (क.) सर्वप्रथम पीठ में व सिर में दर्द होता है। (ख) बुखार, खॉसी, छींक, नाक का बहना व ऑखों का लाल हो जाना। (ग.) लाल दाने शरीर पर उभर आते हैं।

बचाव के उपाय–(क) रोग के लक्षणों की पहचान होते ही स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारी से परामर्श लेना चाहिए। (ख) रोगी को बाहरी व्यक्तियों से मिलने–जुलने नहीं देना चाहिए।(ग) रोगी को निसंक्रामक घोल से नहलाना चाहिए। (घै) 09 माह की आयु में प्रतिरक्षात्मक टीके लगवाना चाहिए।

क्षय रोग– हमारे देश में लगभग 05 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष क्षयरोग से पीड़ित हेाते है। क्षय रोग मुख्य रूप से फेफड़ो का रोग है। यह एक संक्रामक रोग है जो कि एक से दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इस रोग में बैक्टीरिया फेफड़ों को लगातार नष्ट करते रहते हैं।

जर्मन वैज्ञानिक राबर्ट कांख ने 1882 में यह सिद्ध किया था कि ट्यूबर क्लस ब्रेसिलिस क्षय रोग के जीवाणु का नाम है। यह बहुत सूक्ष्म जीवाणु होता है जिसे सूक्ष्मदर्शी यन्त्र की सहायता से देखा जा सकता है। नेशनल सैम्पल सर्वे के अनुसार अनुमान लगाया गया है कि देश में 109 लाख व्यक्ति किसी भी अन्तराल में क्षय रोग से ग्रसित होते है और उनमें भी 25 प्रतिशत लोग ऐसे होते है जो दूसरों को यह बीमारी फैला देते है। क्षय रोग से किसी भी उम्र, लिंग, और वर्ण का व्यक्ति ग्रसित हो सकता है, इसके लिए सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति भी कुछ हद तक जिम्मेदार है।

लक्षण – (क.) हल्का बुखार होता है। (ख) थकावट तथा काम करने मे मन नहीं लगता है। (ग) छाती में दर्द तथा कभी–कभी बलगम के साथ खून भी आता है। (घ) भूख नहीं लगती, तथा वजन भी कम होने लगता है। (ड.) सांस लेने में परेशानी होती है। (च) महिलाओं में उपरोक्त लक्षणों के अतिरिक्त अनियमित मासिक धर्म होने लगता है।

बचाव के उपाय–

(क) रोग के लक्षण प्रकट होने पर तुरन्त किसी कुशल चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए।

(ख) चिकित्सक की सलाह के अनुसार रक्त, मल–मूत्र और बलगम की जांच तथा एक्सरे कराना चाहिए।

(ग) क्षय रोग की औषधि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सरकारी अस्पतालों तथा मेडिकल कालेजों में निःशुल्क वितरित की जाती है।

(घ) रोगी को संतुलित एवं स्वास्थ्यवर्धक आहार देना चाहिए।

(ड) यदि रोगी मांसाहारी है तो मुर्गा, बटेर, बकरे का मांस व अण्डा अधिक मात्रा में प्रोटीन युक्त आहार देना चाहिए।

सावधानियॉ– (क) क्षय रोग से पीड़ित रोगी के बर्तन, तौलिया, बिस्तर तथा अन्य सामानों को सभी के सामानों से अलग रखना चाहिए। (ख) साइकिल आदि की सवारी नहीं करनी चाहिए। (ग) रोगी को थोड़ी–थोड़ी देर बाद अल्पमात्रा मे आहार देते रहना चाहिए।

टिटनेस– टिटनेस एक भयानक रोग है। इसे जमुआ या धनुषटंकार भी कहते हैं। टिटनेस फैलने के मुख्यतया निम्न कारण हैं। (क) संदूषित मिट्टी, पशुओं के मल–मूत्र के सम्पर्क में आने पर। (ख) नवजात शिशु की नाल काटते समय सफाई न होना। (ग) जंग लगी लोहे की किसी भी वस्तु से कटने–छिलने पर टिटनेस हो सकता ह।

लक्षण– (क) चोट लगने पर 5 से 15 दिन के अन्दर शरीर में जकड़न, ऐंठन होने लगती है। (ख) जबड़े की मांसपेशियों में संकुचन की प्रक्रिया होने लगती है। (ग) धीरे–धीरे शरीर में ऐंठन के दौरे पड़ने लगते हैं।

बचाव के उपाय– (क) तुरन्त चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। (ख) जंग लगी वस्तु से चोट लगने पर टिटनेस का टीका लगवाना चाहिए। (ग) गर्म पानी से स्नान करना चाहिए।

सावधानियॉ–

(क) रोगी को शान्त वातावरण में रखना चाहिए। (ख) बच्चों को धूल–मिट्टी में नहीं खेलने देना चाहिए।

निमोनिया– निमोनिया एक ऐसा रोग है जिसे साधारण बोलचाल की भाषा में पसली चलना भी कहते हैं। इस रोग में फेफड़ों पर सूजन आ जाती है। निमोनिया का असर उन्हीं बच्चों को अधिक दिखाई देता है जो मौसमानुकूल खाना और कपड़े नहीं पहनते तथा कमजोर होते हैं। कभी–कभी बच्चों को सीधा लिटाकर दूध या पानी पिलाते समय पेट मे न जाकर सीधा फेफड़ों में चला जाता है जिससे फेफड़ों में सूजन आ जाती है। इन्हीं कारणों से निमोनिया रोग हो जाता है।

लक्षण– (क) तेज बुखार होता है। (ख) छाती में कफ जमा हो जाता है। (ग) बच्चा मॉ का दूध पीना बन्द कर देता है। (घ) नाक बहना व खॉसी उठना। (ड.) सॉस लेने में कठिनाई होना। (च) पेट का फूलना व ऑखे चढ़ जाना। (छ) चेहरे के रंग का पीला पड़ जाना।

बचाव के उपाय–(क) नजदीकी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र या किसी कुशल चिकित्सक से जांच करवानी चाहिए। (ख) निमोनिया से बचने के लिए बच्चों को समयानुकूल भोजन व कपड़े पहनाने चाहिए। (ग) गन्दे स्थानों पर बच्चों को खेलने न दें। (घ) यदि बच्चा छोटा है तो दूध पिलाने के बाद डकार अवश्य दिलवायें। (ड.) बच्चे की मां सन्तुलित व पौष्टिक आहार लें।

सावधानियॉ– झाड़–फूॅक व घरेलू उपचार पर कदापि विश्वास न करें क्योंकि यह बहुत ही घातक बीमारी है।

पोलियो– पोलियो के विषाणु मल–मूत्र व गोबर आदि के प्रदूषण के कारण फैलते हैं। ये मनुष्य की ऑतों मे पहुॅचकर तथा रीढ़ की हड्डी में प्रवेश करके तत्रिकाओं को नष्ट करने लगते हैं, जिससे तन्त्रिका से सम्बन्धित मॉसपेशियॉ अपना कार्य करना बंद कर देती है, तथा बच्चा पोलियोग्रसित हो जाता है। पोलियो मुख्यतः तीन प्रकार का होता है–

पैरालिटिक, स्पाइनल व बल्बर

पैरालिटिक पोलिया–

लक्षण– (क) रोगी के गले में खरांश, ज्वर आना। (ख) भूख न लगना।(ग) उल्टी मितली या दस्त होना। (घ) पसीने के साथ बुखार आना। (ड.) सिर दर्द, गले में दर्द, पॉव और कमर की मांसपेशियों में कसाव।

स्पाइनल पोलियो– यह पोलियो तन्त्रिका तन्त्र से प्रभावित होता है।

लक्षण– (क) तेज बुखार होना। (ख) दौरे पड़ना। (ग) जिन मांसपेशियों पर पोलियो का असर होता है वह धीरे–धीरे शिथिल पड़ने लगती हैं, एवं जो अंग पोलियोग्रस्त होता है, वह सूख जाता है।

बल्बर पोलयो (मस्तिष्क मूलाधार) श्वसन और हृदय गति को प्रभावित करता है।

लक्षण– (क) इसमें रोगी बोलने में असमर्थ हो जाता है। (ख) शरीर के अंग हाथ, पॉव, होंठ और जीभ नीले पड़ जाते हैं।

बचाव के उपाय– (क) 0–5 वर्ष तक के बच्चे को पोलियो ड्राप्स पिलानी चाहिए। (ख) रोगी को संतुलित व पौष्टिक आहार देना चाहिए। (ग) खून का सन्तुलन बनाये रखने के लिए व्यायाम करना चाहिए।

सावधानियॉ–

(क.) पोलिया का दौरा पड़ने पर कुशल चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

काली खॉसी –यह एक संक्रामक रोग है। यह रोग प्रायः मार्च और अप्रैल में अधिक होता है। 05 वर्ष से कम आयु के बच्चों में अधिक होता है। यह रोग रोगी के जूठे बर्तनों के प्रयोग करने से हो जाता है। यह वायु द्वारा संक्रमित तथा जीवाणु जनित रोग हैं।

लक्षण– (क) तेज बुखार होना। (ख) दौरे पड़ना। (ग) जिन मांसपेशियों पर पोलियो का असर होता है वह धीरे–धीरे शिथिल पड़ने लगती हैं, एवं जो अंग पोलियोग्रस्त होता है, वह सूख जाता हैं।

बचाव के उपाय– (क) 0–5 वर्ष तक के बच्चे को पोलियो ड्राप्स पिलानी चाहिए। (ख) रोगी को संतुलित व पौष्टिक आहार देना चाहिए। (ग) खून का सन्तुलन बनाये रखने के लिए व्यायाम करना चाहिए।

सावधानियॉ–

(क) पोलिया का दौरा पड़ने पर कुशल चिकित्सक को दिखाना चाहिए।

काली खॉसी लक्षण– (क) बच्चा शुरू में खांसने लगता है। (ख) जब खॉसी अधिक दिनों की हो जाती है तब बच्चा खॉसते–खॉसते उल्टी भी करने लगता है। (ग) खांसी आने से मुॅह लाल व ऑखों में पानी आने लगता है। (घ) कुकर खांसी से बच्चे को निमोनिया, कुपोषण, मस्तिष्क से सम्बन्धित रोग भी हो सकता है।

बचाव के उपाय– (क) रोग के लक्षण प्रारम्भ होने पर चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। (ख) बच्चे को मौसम के अनुसार वस्त्र पहनाने चाहिए। (ग) बच्चे को पेय पदार्थ गुनगुना करके दें।

सावधानियॉ–

(क) बच्चे को पौष्टिक तत्वों से युक्त भोजन दें। (ख) प्रतिरक्षात्मक टीके लगवाने चाहिए।

डिप्थीरिया – डिप्थीरिया एक संक्रामक रोग है। डिप्थीरिया सर्दी के मौसम में अधिक होता है। यह मुख्यतया इन्फेक्शन तथा ड्रापलेप न्यूक्लियर द्वारा फैलता है। डिप्थीरिया के जीवाणु श्वॉस नलिकाओं में फैलकर विष उत्पन्न कर देते है। जिससे हृदय को हानि होती हैं यह रोग रोगी के सम्पर्क में रहने से अन्य व्यक्ति को हो सकता है।

लक्षण– (क) बच्चे को सांस लेने में कठिनाई होती है (ख) गले में सूजन आने लगती है, ठीक से खाना नही खाया जाता। (ग) नाक से लगातार पानी बहने लगता है। (घ) गले में घाव हो जाते हैं, बाद में ये घाव टॉन्सिल का रूप धारण कर लेते हैं।(ड.) इस प्रकार के लक्षण दिखाई देने पर बाल रोग विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए।

बचाव के उपाय– (क) बच्चे को स्कूल नहीं भेजना चाहिए। (ख) बच्चे को प्रतिरक्षात्मक टीके लगवाने चाहिए। (ग) खॉसते व छींकते समय रूमाल का प्रयोग करना चाहिए। (घ) बच्चे को तरल पदार्थ खाने के लिए देना चाहिए जिससे उसके गले की झिल्ली न टूटे।

खसरा – खसरे को साधारण भाषा में दुलारो माता कहते है। यह रोग वायरस द्वारा होता है। जब बच्चे मिट्टी मे खेलते अथवा खिलौने से खेलते हैं, तब उसके जीवाणु बच्चे में प्रवेश कर जाते है। यह रोग वायु द्वारा संक्रमित होता है।

लक्षण– (क) बच्चे को बुखार आने लगता है। (ख) बच्चा चिड़चिड़ा और बेचैन रहने लगता है। (ग) लाल दाने कानों के पीछे, पेट पर व माथे पर पहले दिखाई देते हैं। उसके बाद पूरे शरीर पर दिखाई देने लगते हैं।

बचाव के उपाय– (क) एक बच्चे से दूसरे बच्चे में होने की सम्भावनाऍ अधिक होती हैं। (ख) बच्चे को ठण्ड से बचाना चाहिए। (ग) हल्का सुपाच्य भोजन देना चाहिए।

सावधानियॉ–

(क) बच्चे के खिलौने तथा वस्त्रों को निसंक्रमित कर देना चाहिए। (ख) बच्चे को 06 माह से 01 वर्ष के भीतर की उम्र में खसरा निवारण टीका लगवाना चाहिए।